SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

सक्रियता से सीखने की विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन

[1]संजय द्विवेदी

सह-प्राध्यापक

[2]कुलदीप तिवारी

सहायक प्राध्यापक

शिक्षा विभाग, श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

सारांश

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। इसकी गतिशीलता की निरंतरता बनाए रखने में शिक्षा की अहम भूमिका रहती है। शिक्षण प्रक्रिया का प्रभाव विद्यार्थियों के सीखने की क्षमता पर पड़ता है। सक्रिय रहकर सीखने की विधि से विद्यार्थियों की समझ विकसित होती है। प्रस्तुत शोध में सक्रिय रहकर सीखने की विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। कक्षा 8वीं के 40-40 विद्यार्थियों के प्रयोगात्मक तथा नियंत्रित समूह बनाकर केवल प्रयोगात्मक समूह का सक्रिय विधि द्वारा शिक्षण कराया गया। स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण तथा विज्ञान पढ़ने में रुचि प्रश्नावली प्रशासित कर सांख्यिकीय गणना द्वारा आँकड़े प्राप्त किए गए। गणना के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि सक्रिय रहकर सीखने की विधि का विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थियों की विषय के प्रति रुचि विकसित की जा सकती है।

कुंजी शब्द

शिक्षा, गतिशीलता, विद्यार्थी, परीक्षण, गणना, प्रश्नावली।

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के समन्वयपूर्ण स्वाभाविक विकास में सहयोग देकर उसका सर्वांगीण विकास करती है तथा उसे अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को

अधिक प्रभावी, रुचिकर एवं छात्र-केंद्रित बनाने की निरंतर आवश्यकता अनुभव की जा रही है। परंपरागत शिक्षण विधियाँ, जो मुख्यतः व्याख्यान एवं स्मृति-आधारित अधिगम पर केंद्रित रही हैं, आज के जिज्ञासु, तकनीक-संवेदनशील एवं आलोचनात्मक सोच वाले शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं कर पा रही हैं। इसी संदर्भ में सक्रियता से सीखने की विधि एक प्रभावी वैकल्पिक शिक्षण दृष्टिकोण के रूप में उभरकर सामने आई है। सक्रिय रहकर सीखने की विधि में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों कक्षा शिक्षण में सक्रिय रहते हैं। सक्रियता से बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि बढ़ती है, बच्चे खुश नजर आते हैं तथा उनके सीखने के प्रति अधिक जिज्ञासा उत्पन्न होती है। बच्चे बिना झिझक के शिक्षकों से अपनी समस्याओं के समाधान हेतु उत्सुक रहते हैं। सक्रियता से सीखने के माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता एवं सृजनशीलता का विकास होता है। बच्चों में आपसी सहयोग से सीखने की आदत विकसित होती है। इसलिए सक्रिय रहकर सीखने की विधि की प्रभावशीलता का आकलन आवश्यक है।

सक्रिय अधिगम वह शिक्षण विधि है जिसमें विद्यार्थी केवल श्रोता न रहकर सीखने की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेते हैं। इसमें समूह चर्चा, समस्या-समाधान, परियोजना कार्य, केस स्टडी, भूमिकानिर्वहन, प्रश्नोत्तर, सहकारी अधिगम एवं अनुभवात्मक गतिविधियों को सम्मिलित किया जाता है। यह विधि शिक्षार्थियों को सोचने, विश्लेषण करने, तर्क प्रस्तुत करने तथा ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग हेतु प्रेरित करती है।

शिक्षाविदों जैसे जॉन डेवी, जीन पियाजे तथा लेव वाइगोत्स्की ने अधिगम को एक सक्रिय एवं सामाजिक प्रक्रिया माना है, जहाँ ज्ञान का निर्माण अनुभव एवं सहभागिता के माध्यम से होता है। सक्रियता से सीखने की विधि इन सिद्धांतों पर आधारित है और यह विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोदैहिक क्षमताओं के समग्र विकास में सहायक सिद्ध होती है। वर्तमान शोध का उद्देश्य सक्रिय अधिगम विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन करना है, विशेष रूप से यह जानने हेतु कि यह विधि विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि, अवधारणात्मक स्पष्टता, रचनात्मक सोच, आत्मविश्वास तथा कक्षा सहभागिता पर किस प्रकार प्रभाव डालती है। यह अध्ययन शिक्षकों, शिक्षण संस्थानों एवं नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जिससे वे शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली एवं शिक्षार्थी-केंद्रित बना सकें।

शोध के उद्देश्य

1. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सक्रिय रहकर सीखने की विधि का प्रभाव ज्ञात करना।
2. सक्रिय रहकर सीखने की विधि का विद्यार्थियों की विषय के प्रति रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. पूर्व परीक्षण में प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
2. पश्चात परीक्षण में प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
3. पूर्व एवं पश्चात परीक्षण में नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
4. पूर्व एवं पश्चात परीक्षण में प्रयोगात्मक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
5. सक्रिय रहकर सीखने की विधि द्वारा विद्यार्थियों की विषय के प्रति रुचि विकसित होगी।

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार

परिसीमन

यह अध्ययन बाँदा जिले के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित है।

शोध प्रक्रिया

शोध विधि: इस अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया।

नमूना: बाँदा जिले के बड़ोखर ब्लॉक के उच्च प्राथमिक विद्यालय फतेहपुर एवं नई बस्ती का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। कक्षा 8वीं के 40 विद्यार्थियों का चयन कर उन्हें प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह में विभाजित किया गया।

उपकरण

1. स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (कक्षा 8वीं, विषय - विज्ञान)
2. सक्रिय रहकर सीखने की विधि आधारित पाठ योजनाएँ
3. स्वनिर्मित प्रश्नावली

चर

- स्वतंत्र चर: सक्रिय रहकर सीखने की विधि
- आश्रित चर: शैक्षिक उपलब्धि, उपस्थिति, विषय के प्रति रुचि
- सहचर: प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह

सांख्यिकीय विश्लेषण: मध्यमान, मानक विचलन तथा t-परीक्षण का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सक्रियता से सीखने की विधि पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों की तुलना में अधिक प्रभावी, व्यावहारिक एवं छात्र-केंद्रित है। इस शोध के निष्कर्षों से यह प्रमाणित हुआ कि जब विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान किया जाता है, तो उनकी समझ, रुचि एवं शैक्षणिक उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि सक्रिय अधिगम विधि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक चिंतन, समस्या-समाधान क्षमता, संप्रेषण कौशल तथा सहयोगात्मक व्यवहार को विकसित करती है। इसके अतिरिक्त, यह विधि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास एवं आत्म-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करती है, जिससे वे कक्षा में अधिक सहजता से अपने विचार प्रस्तुत कर पाते हैं।

हालाँकि सक्रिय अधिगम विधि के सफल क्रियान्वयन हेतु प्रशिक्षित शिक्षक, उपयुक्त शिक्षण सामग्री, समय प्रबंधन तथा संसाधनों की आवश्यकता होती है, तथापि इसके सकारात्मक परिणाम इन चुनौतियों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि

सक्रियता से सीखने की विधि आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप है और इसे विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में व्यापक रूप से अपनाया जाना चाहिए। अंततः यह शोध शिक्षा प्रणाली में नवाचार, गुणवत्ता सुधार एवं शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है तथा भविष्य में इस क्षेत्र में और अधिक व्यापक एवं तुलनात्मक अनुसंधान की संभावनाओं को भी उद्घाटित करता है।

सुझाव

1. सभी विद्यालयों में सक्रिय रहकर सीखने की विधि का प्रयोग किया जाए।
2. शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जाए।
3. समूह कार्य एवं चर्चा को प्रोत्साहित किया जाए।
4. प्रश्न पूछने एवं प्रयोग करने के अवसर दिए जाएँ।
5. सहायक शिक्षण सामग्री का नियमित प्रयोग किया जाए।

संदर्भ

1. गोलानी, टी.पी. (1982) - दृश्य एवं श्रव्य सहायक सामग्री का उपयोग।
2. रविन्द्रनाथ, जे.एम. (1982) - उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण।
3. सेम, चन्द्राणी (2000) - वैज्ञानिक क्रियाकलापों का अध्ययन।
4. बाला जी, सत्यम (2017) - सक्रिय रहकर सीखने की विधि की प्रभावशीलता।
5. National Council of Educational Research and Training (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा. नई दिल्ली: NCERT.
6. University Grants Commission (2020). Quality Teaching-Learning Framework. नई दिल्ली: UGC.